मंदिर की खोज: चालुक्य के विस्तार का प्रमाण

प्रिलिम्स के लिये:

[बादामी के चालुक्य,](#) मुदमिनाक्यिम गाँव, गंडालोरनरू, आलमपुर में स्थित जोगुलंबा मंदिर, येलेश्वरम के जलमग्न स्थल, चालुक्य काल का वास्तुशिल्प डिज़ाइन, पुलकेसिन II का एहोल अभिलेख

मेन्स के लिये:

चालुक्य राजवंश से संबंधित मुख्य विशेषताएँ

स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया

चर्चा में क्यों?

पब्लिक रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्ट्री, आर्कियोलॉजी एंड हेरिटेज (PRIHAH) के पुरातत्त्वविदों ने **तेलंगाना** के नलगोंडा ज़िले के **मुदमिनाक्यिम गाँव** में एक दुर्लभ अभिलेख सहित **बादामी चालुक्य काल** के दो प्राचीन मंदिरों के अस्तित्व का पता लगाया है।

हालिया उत्खनन से संबंधित प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

- **मंदिर:** गाँव के अंत में स्थित दोनों मंदिरों का कालक्रम 543 ईस्वी और 750 ईस्वी के बीच का है जो **बादामी के चालुक्यों** के शासनकाल को संदर्भित करता है।
  - ये मंदिर रेखा नागर प्रारूप में निर्मित **बादामी चालुक्य** और साथ ही **कदंब नागर शैली** की विशेषताओं को प्रतिबिंबित करते हुए अद्वितीय स्थापत्य शैली का प्रदर्शन करते हैं।
  - एक मंदिर के गर्भगृह में एक **पनवत्तम (शिवलिंग का आधार)** के अस्तित्व का पता लगाया गया है।
  - दूसरे मंदिर में भगवान **विष्णु की मूर्ति** पाई गई है।
- **अभिलेख:** खोज के दौरान एक अभिलेख भी प्राप्त हुआ जिसे **'गंडालोरनरू' (Gandaloranru)** कहा जाता है जिसका कालक्रम **8वीं अथवा 9वीं शताब्दी ईस्वी** का है।
- **महत्त्व:** पहले, **आलमपुर के जोगुलाम्बा मंदिर** और **येलेश्वरम के जलमग्न स्थलों** को **बादामी चालुक्य प्रभाव** का सबसे दूरवर्ती क्षेत्र माना जाता था।
  - नई खोज से चालुक्य साम्राज्य की ज्ञात सीमाओं का काफी विस्तार हुआ है।

चालुक्य राजवंश से संबंधित प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

- **परिचय**: चालुक्य राजवंश ने 6वीं से 12वीं शताब्दी तक दक्षिणी और मध्य भारत के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर शासन किया।
  - इसमें तीन अलग-अलग राजवंश शामिल थे: **बादामी चालुक्य, पूर्वी चालुक्य** और **पश्चिमी चालुक्य**।
  - **वातापी** (कर्नाटक में आधुनिक बादामी) से उत्पन्न बादामी के चालुक्यों ने 6वीं शताब्दी के प्रारंभ से 8वीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया और **पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल के दौरान** अपने चरम पर पहुँच गए।
  - पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल के बाद, पूर्वी चालुक्य पूर्वी दक्कन में एक स्वतंत्र साम्राज्य के रूप में उभरे, जो 11वीं शताब्दी तक **वेंगी** (वर्तमान आंध्र प्रदेश में) के आस-पास केंद्रित था।
  - 8वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों के उदय ने पश्चिमी दक्कन में बादामी के चालुक्यों पर प्रभुत्व स्थापित किया।
    - हालाँकि उनकी विरासत को उनके वंशजों, पश्चिमी चालुक्यों द्वारा पुनर्जीवित किया गया था, जिन्होंने 12वीं शताब्दी के अंत तक **कल्याणी (कर्नाटक में आधुनिक बसवकल्याण)** पर शासन किया था।
- **नींव: पुलकेशिन प्रथम (लगभग 535-566 ई.)** को बादामी के पास एक पहाड़ी को मज़बूत करने एवं चालुक्य राजवंश के प्रभुत्व की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है।
  - **बादामी शहर की औपचारिक स्थापना कीर्तिवर्मन (566-597) द्वारा** की गई थी, जो चालुक्य शक्ति एवं संस्कृति के केंद्र के रूप में कार्यरत थे।
- **राजव्यवस्था एवं प्रशासन: चालुक्यों ने प्रभावी शासन के लिये अपने क्षेत्र को राजनीतिक इकाइयों में विभाजित करते हुए एक संरचित प्रशासनिक प्रणाली लागू की।**
  - इन प्रभागों में विषय, राष्ट्र, नाडु तथा ग्राम शामिल थे।
- **धार्मिक संरक्षण:** चालुक्य शैव और वैष्णव दोनों धर्मों के उल्लेखनीय संरक्षक थे।
  - मुख्यधारा के हिंदू धर्म से परे, चालुक्यों ने **जैन धर्म** एवं **बौद्ध धर्म** जैसे अन्य संप्रदायों को भी संरक्षण दिया, जो धार्मिक विविधता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उदाहरण है।
    - **पुलकेशिन द्वितीय** के कवि-साहित्यकार **रविकीर्ति एक जैन विद्वान** थे।
    - यात्री ह्वेन त्सांग के अनुसार चालुक्य क्षेत्र में कई बौद्ध केंद्र थे जिनमें **हीनयान एवं महायान संप्रदाय के 5000 से अधिक अनुयायी** रहते थे।
- **स्थापत्य कला: ऐतिहासिक रूप से दक्कन में चालुक्यों ने नरम बलुआ पत्थरों को माध्यम बनाकर मंदिर निर्माण की तकनीक शुरू की थी।**
  - उनके मंदिरों को दो भागों में विभाजित किया गया है: उत्खनन से प्राप्त **गुफा मंदिर एवं संरचनात्मक मंदिर**।
    - **बादामी, संरचनात्मक एवं उत्खनन दोनों प्रकार के गुफा मंदिरों के लिये** जाना जाता है।
    - **पत्तदकल एवं ऐहोल** संरचनात्मक मंदिरों के लिये भी लोकप्रिय हैं।
- **साहित्य:चालुक्य शासकों ने शास्त्रीय साहित्य एवं भाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हुए आधिकारिक शिलालेखों के लिये संस्कृत का उपयोग किया।**
  - संस्कृत की प्रमुखता के बावजूद, चालुक्यों ने **कन्नड** जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के महत्त्व को भी स्वीकार किया और साथ ही उन्हें लोगों की भाषा के रूप में मान्यता दी।
- **चित्रकला:** चालुक्यों ने **चित्रकला में वाकाटक शैली** को अपनाया। बादामी में विष्णु को समर्पित एक गुफा मंदिर में चित्र पाए गए हैं।

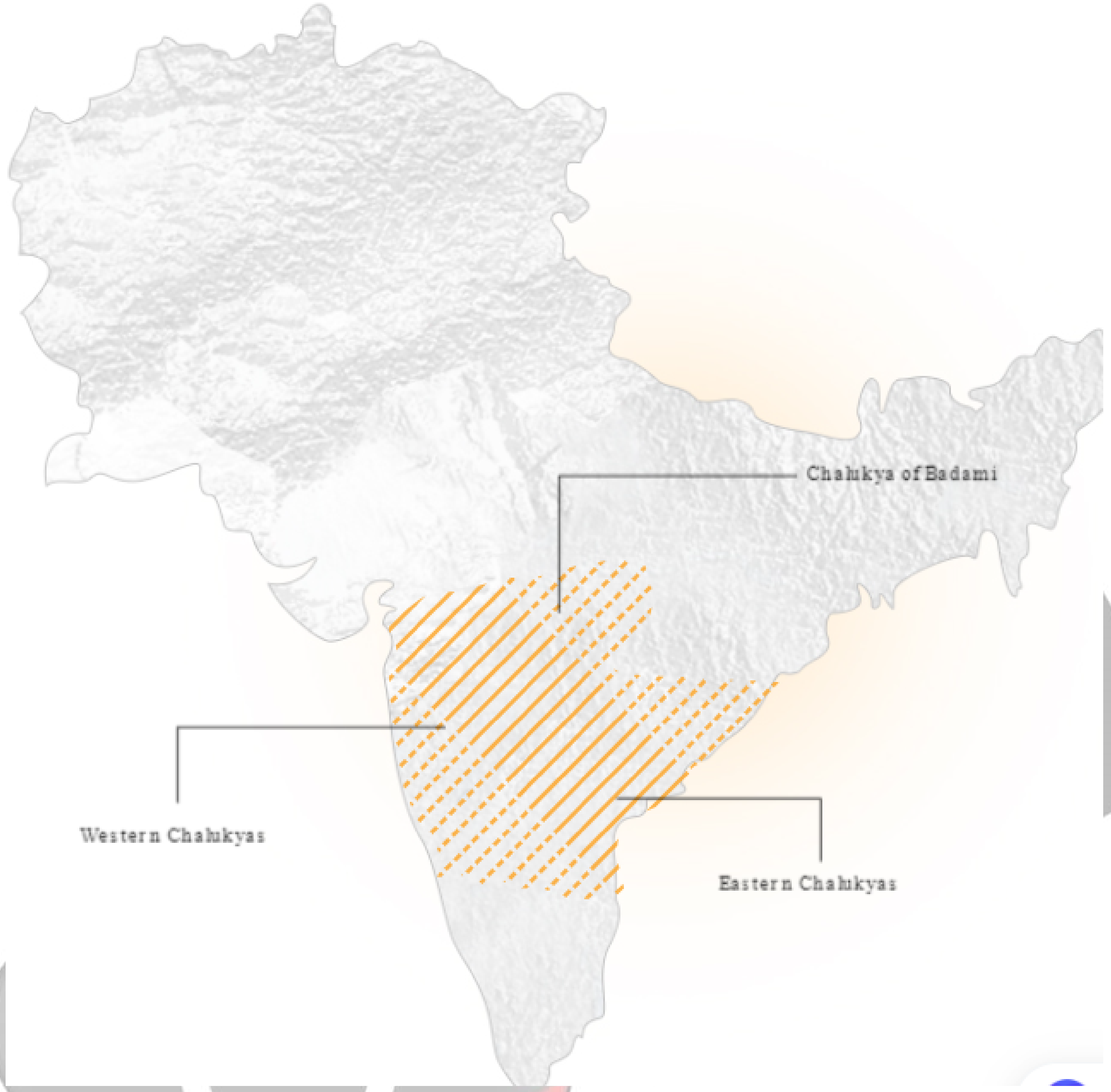

पुलकिसिन-II का ऐहोल शिलालेख:

- कर्नाटक के एहोल में **मेगुडी मंदिर में स्थित,** एहोल शिलालेख चालुक्य इतिहास और उपलब्धियों में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
  - एहोल को भारतीय मंदिर वास्तुकला का उद्गम स्थल माना जाता है।
- प्रसिद्ध कवि **रविकृति** द्वारा तैयार किया गया, यह शिलालेख चालुक्य राजवंश, विशेष रूप से **राजा पुलकेशिन-II** को एक गीतात्मक श्रद्धांजलि है, जिसे सत्य (सत्यश्रय) के अवतार के रूप में सराहा जाता है।
- शिलालेख में विरोधियों पर चालुक्य वंश की विजय का वर्णन है, जिसमें **हर्षवर्द्धन** की प्रसिद्ध हार भी शामिल है।

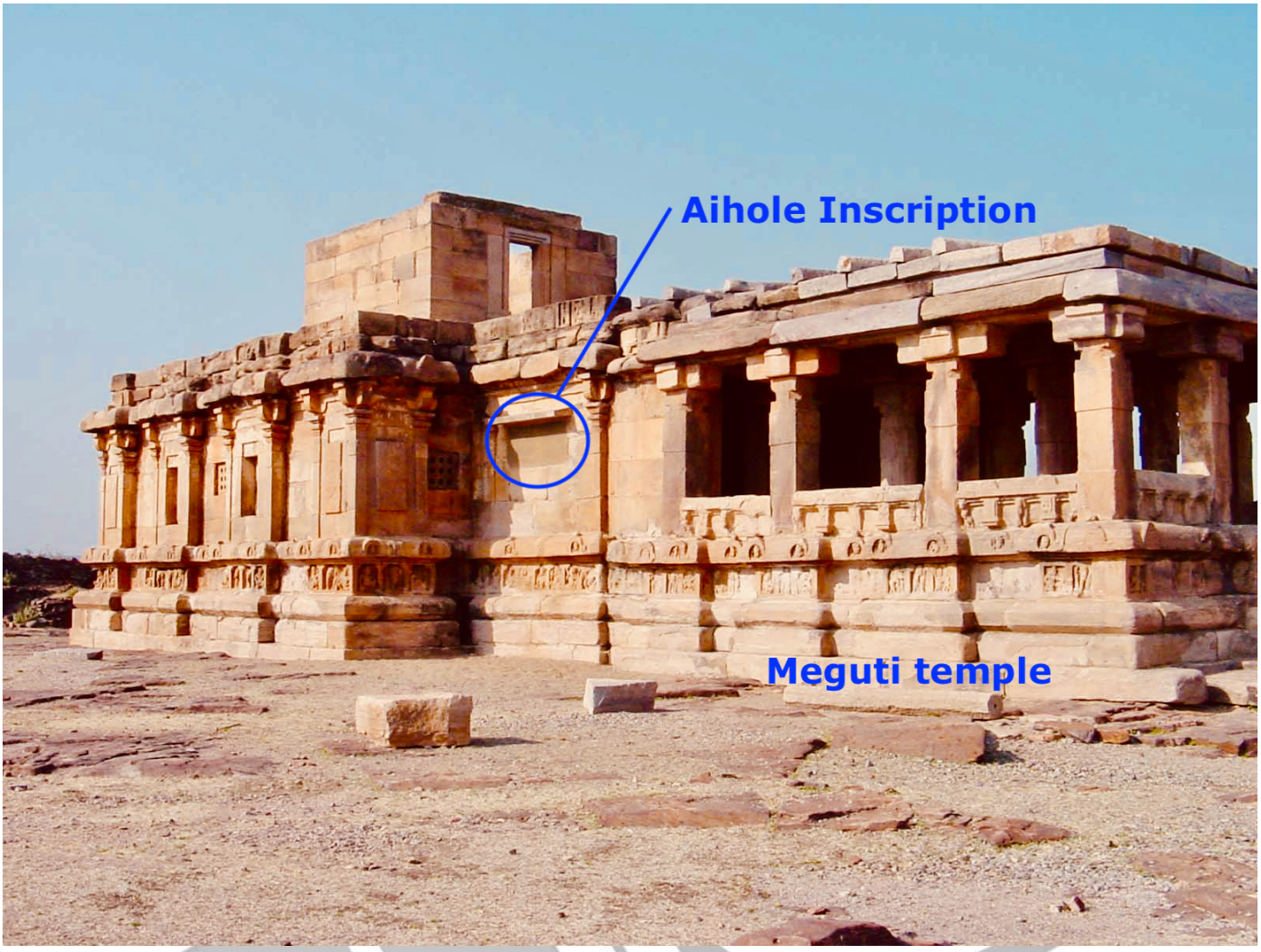

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/temple-discoveries-highlight-chalukya-expansion